मेरी जेब में

डोर्रिथ एम. सिमो

1939 के जर्मनी में छोटे बच्चों से भरी एक ट्रेन छूटने वाली है. एक छोटी बच्ची कपड़े के कुत्ते को पकड़े अकेली खड़ी है. उसके माता-पिता उससे कहते हैं, “अच्छी तरह से रहना. हम जल्द ही तुमसे मिलेंगे." वे उसे बताते हैं कि वो स्कॉटलैंड में सुरक्षित रहेगी. माता-पिता उसे यह नहीं बताते हैं कि उनका जीवन बिल्कुल बदल गया है - कि अब वे अपने ही घर में नहीं रह सकते हैं.

इस ईमानदार, युद्धकाल के आत्मकथात्मक विवरण को एक बच्ची ने बयां किया है. डोर्रिथ ने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान एक जर्मन यहूदी शरणार्थी के रूप में अपने स्वयं के अनुभव बयां किए हैं.

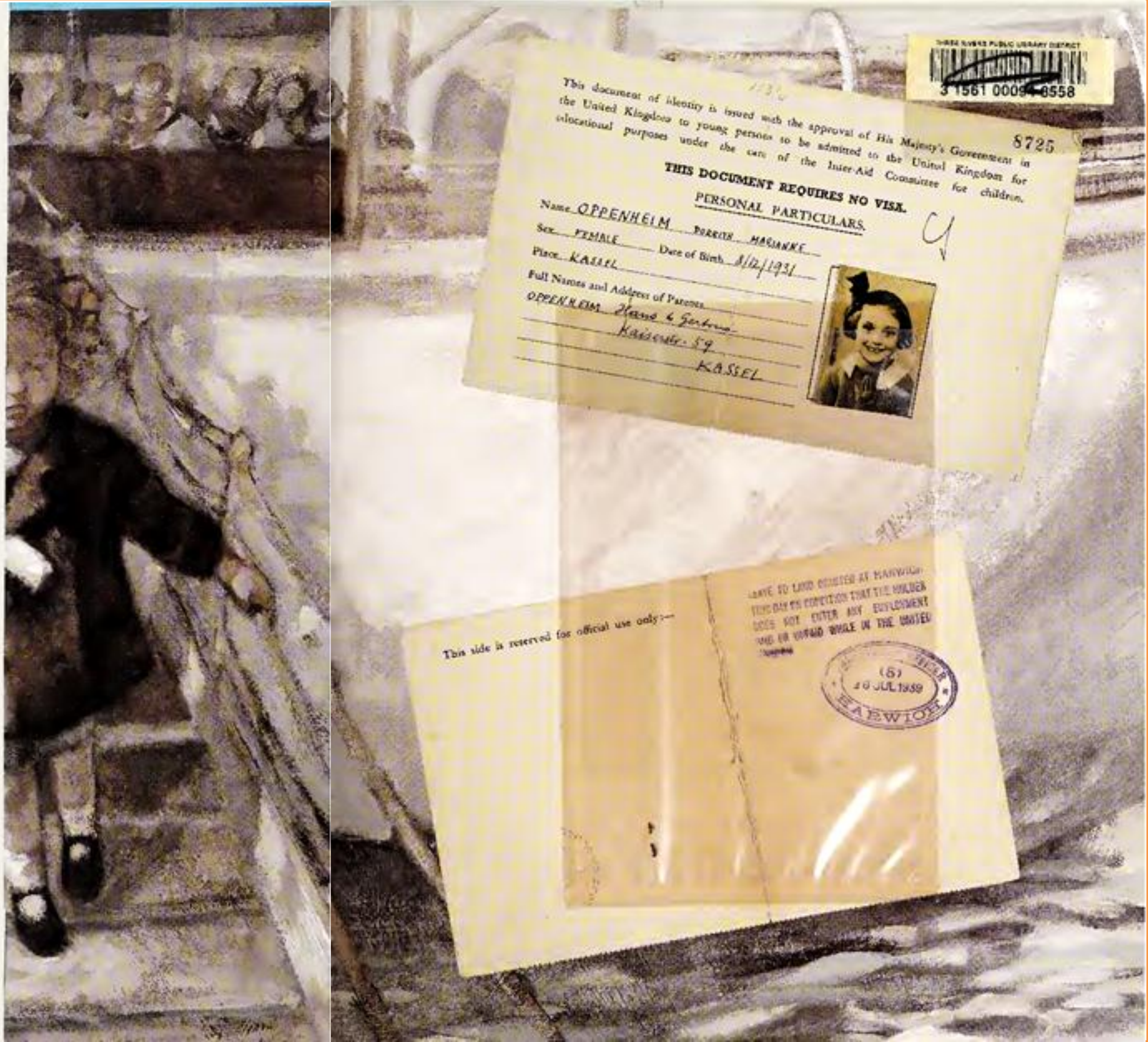

मेरी जेब में

डोर्रिथ एम. सिमो

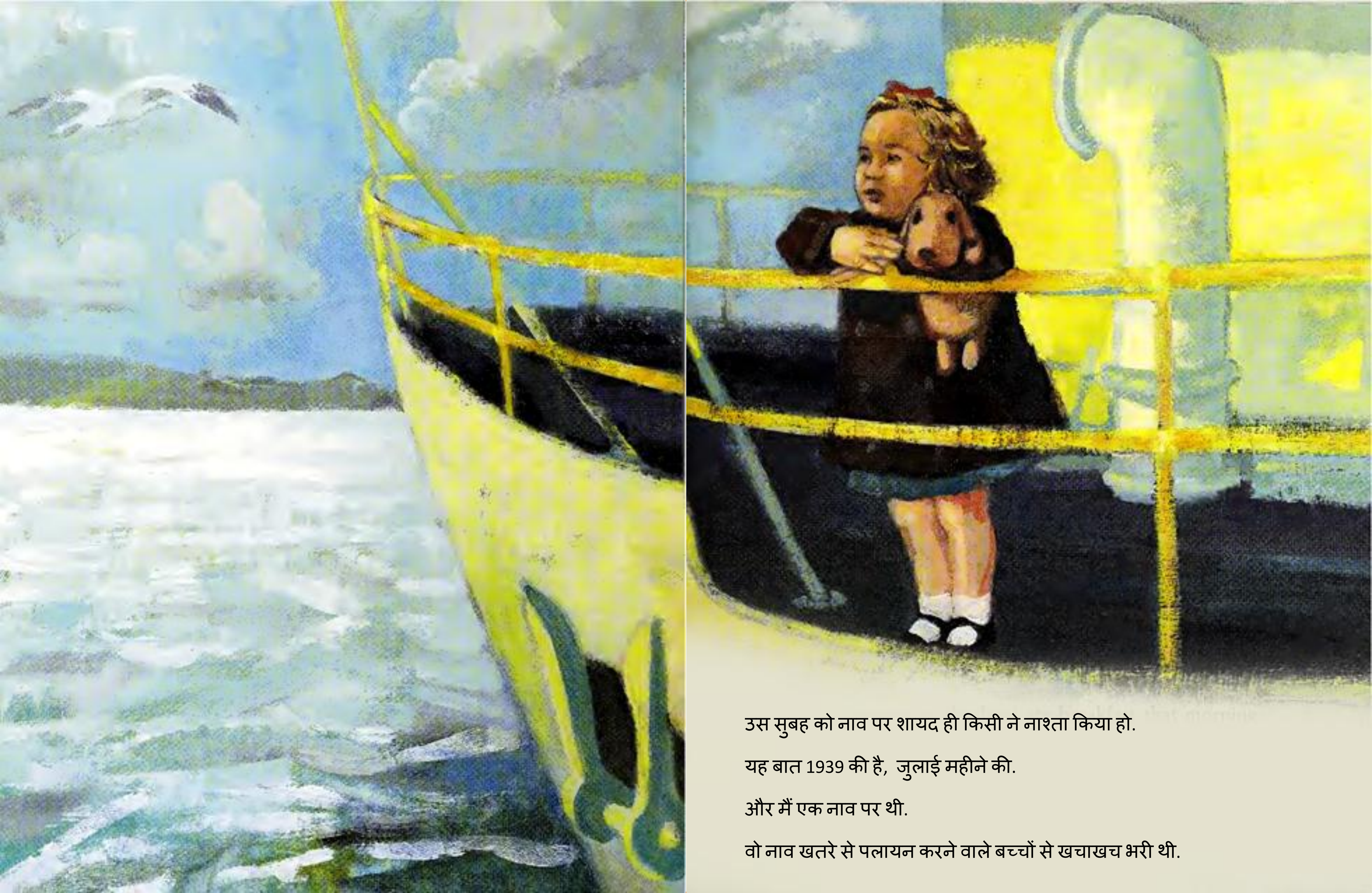

उस सुबह को नाव पर शायद ही किसी ने नाश्ता किया हो.

यह बात 1939 की है, जुलाई महीने की.

और मैं एक नाव पर थी.

वो नाव खतरे से पलायन करने वाले बच्चों से खचाखच भरी थी.

फिर हम हैम्बर्ग रेलवे स्टेशन पर पहुंचे.

वहां एक ट्रेन हमारा इंतजार कर रही थी.

वो हमें हॉलैंड ले जाएगी जहाँ से हम नाव की यात्रा करेंगे.

मुट्टी (माँ) और वटी (पिताजी) ने मुझसे कहा कि वो नाव हमें एक नई ज़िंदगी की ओर ले जाएगी.

मेरे माता-पिता रो पड़े. हम भी रोए.

गलती से मैंने अपना कपड़े वाला खिलौना कुत्ता गिरा दिया.

वो पटरियों पर जाकर गिरा. फिर एक आदमी ने मेरे कुत्ते को उठाया.

उसने पुकारा, "पकड़ो!" और फिर उसने कुत्ते को मेरी ओर फेंका.

जैसे ही मैंने कुत्ते को पकड़ा, ट्रेन चलने लगी.

मैंने रोना बंद कर दिया. मैंने अपना हाथ लहराते हुए अलविदा किया

और अपने कुत्ते को कसकर पकड़कर रखा.

आखिर में ट्रेन स्टेशन पर जाकर रुकी. एक बड़े लड़के ने बताया कि अब हम हॉलैंड में थे.

वहां हमने एक हरे भरे खेत में बैठकर पनीर के सैंडविच खाए.

जिन डच लोगों ने हमारी मदद की थी हमने उनके लिए गाने गाए.

एक गाना हॉलैंड की प्रसिद्ध "मरमेड" के बारे में था.

उन्होंने हमें दूध और चॉकलेट खाने को दीं.

जल्द ही हम फिर से अपनी यात्रा पर निकल पड़े.

माता-पिता के बिना मुझे नाव पर सोना बड़ा अजीब लगा. वहां केवल हम भाई-बहन ही एक-दूसरे को जानते थे. रात में कुछ बच्चे गुम हो गए. वे अपने केबिनों से बाथरूम की तलाश में निकले, और फिर उन्हें अपने केबिनों में वापिस आने का रास्ता याद ही नहीं रहा.

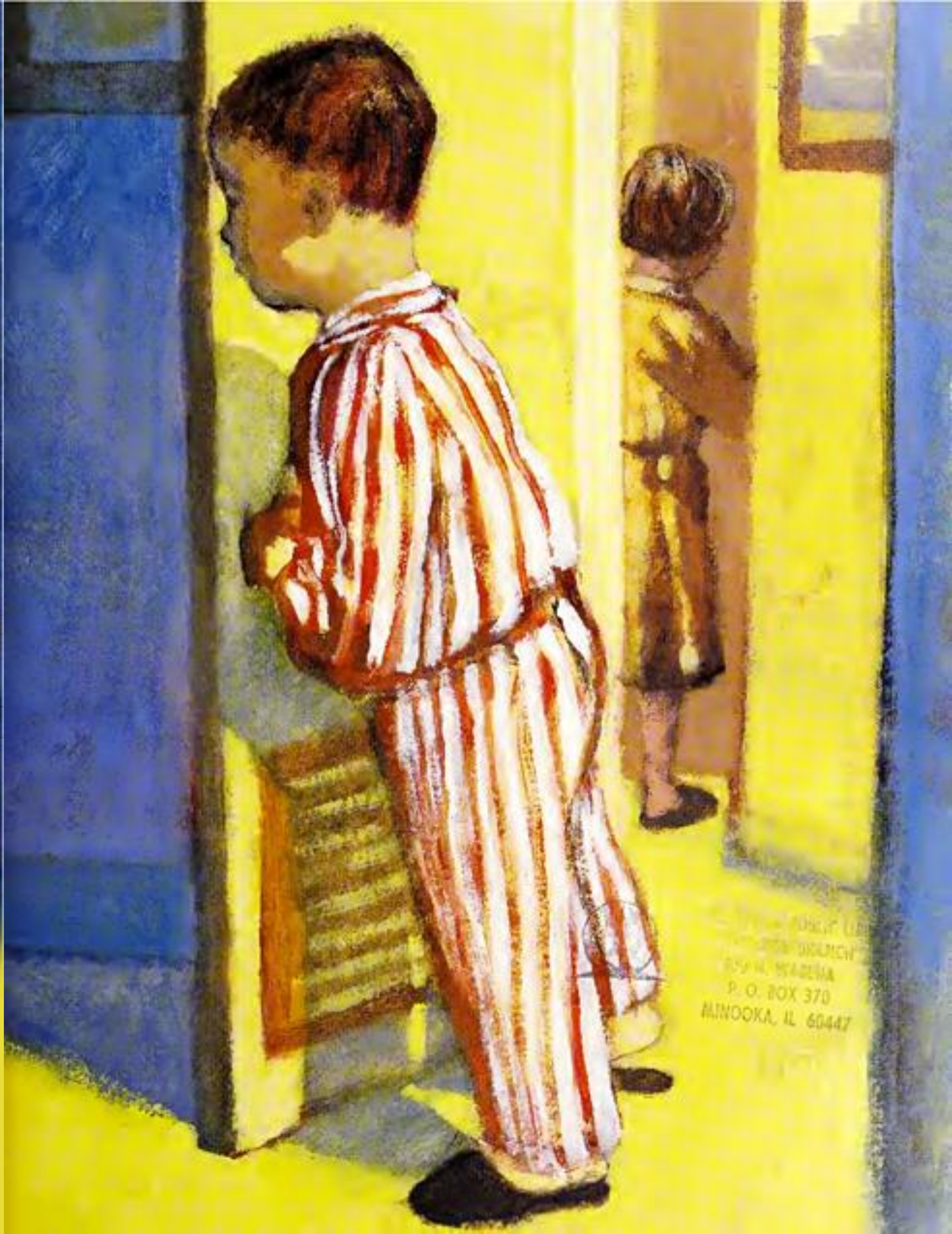

P. O. BOX 370
MINOOKA, IL 60447

अब नाव से उतरने का समय आ गया था.

हमारे गलों से नाम के लेबिल लटके थे.

वहां एक लकड़ी का पुल था.

पुल से समुद्र देखकर मुझे चक्कर आने लगा.

मैं हिलना नहीं चाहता थी लेकिन पीछे से सभी मुझे धक्का दे रहे थे.

मैंने अपनी आँखें बंद कीं और रेलिंग को पकड़ लिया.

फिर मैं अपनी आंखें बंदकर करके आगे बढ़ती रही.

अंत में, मेरे पैर जमीन को छूए.

फिर मैं रोने लगी.

सामने एक ट्रेन तैयार खड़ी थी.

किसी ने कहा कि वो एक ब्रिटिश ट्रेन थी
जो हमें लंदन ले जा रही थी.

स्टेशन पर कई लोग थे.

कुछ बच्चों से मिलने के लिए
उनके दोस्त और परिवार मौजूद थे.

कई बच्चे मदद के लिए इधर-उधर देख रहे थे.

कुछ लोगों के हाथ में कैमरे थे,
और कुछ लोगों के हाथ में फोटोग्राफ थे.

उन लोगों ने बच्चों को अपने घरों में
ले जाने का वादा किया था.

बच्चे तब तक इन दत्तक परिवारों के साथ रहेंगे
जब तक वे फिर से अपने असली माता-पिता
से नहीं मिलते.

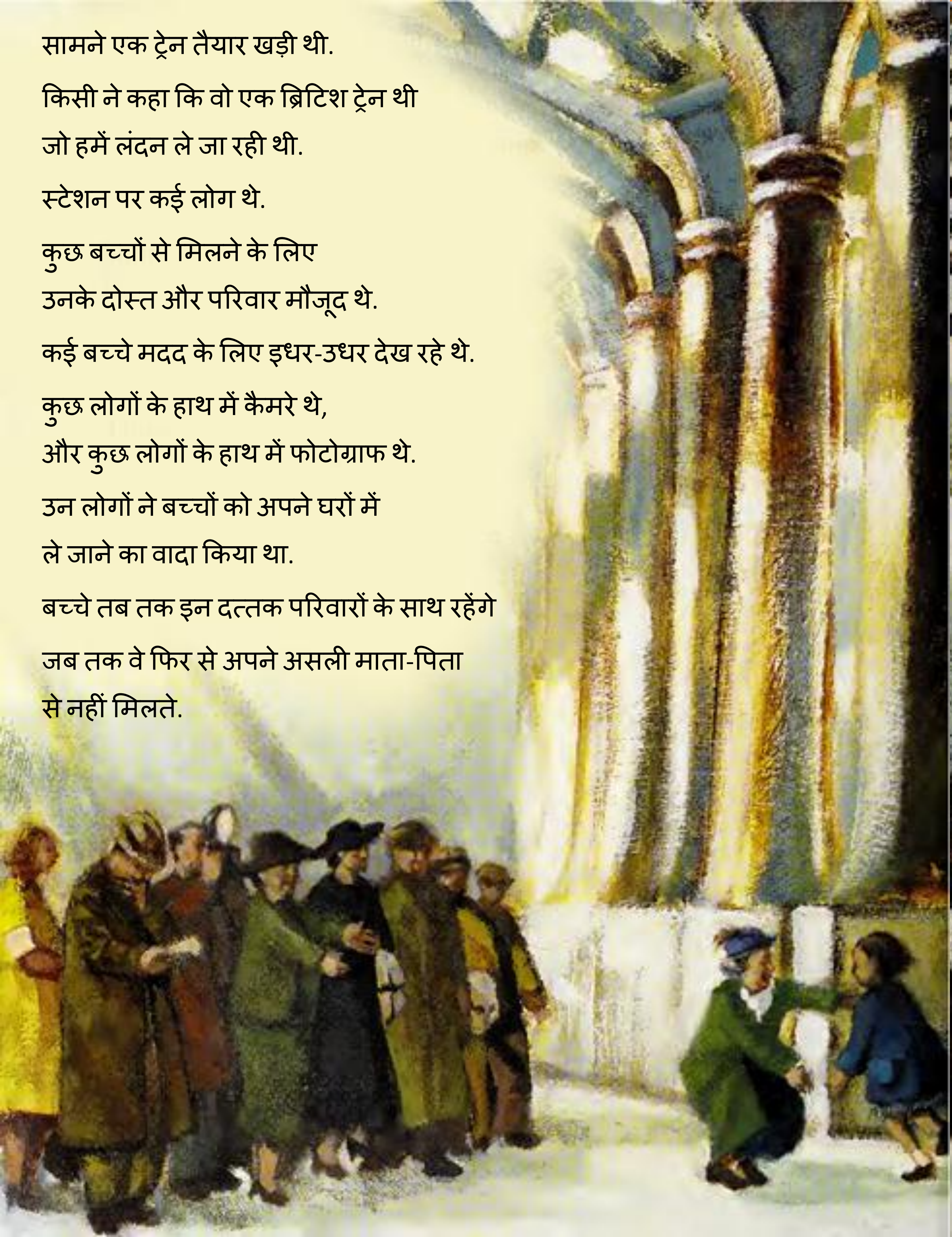

एक आदमी और महिला एक फोटोग्राफ को बड़े गौर से देख रहे थे.

फिर महिला ने अपने पति का हाथ छुआ.

''देखो,'' उसने कहा. "उस लड़की के बालों में लाल रिबन है और वो कपड़े का खिलौना कुत्ता पकड़े है."

इस तरह उन्होंने मुझे खोजा.

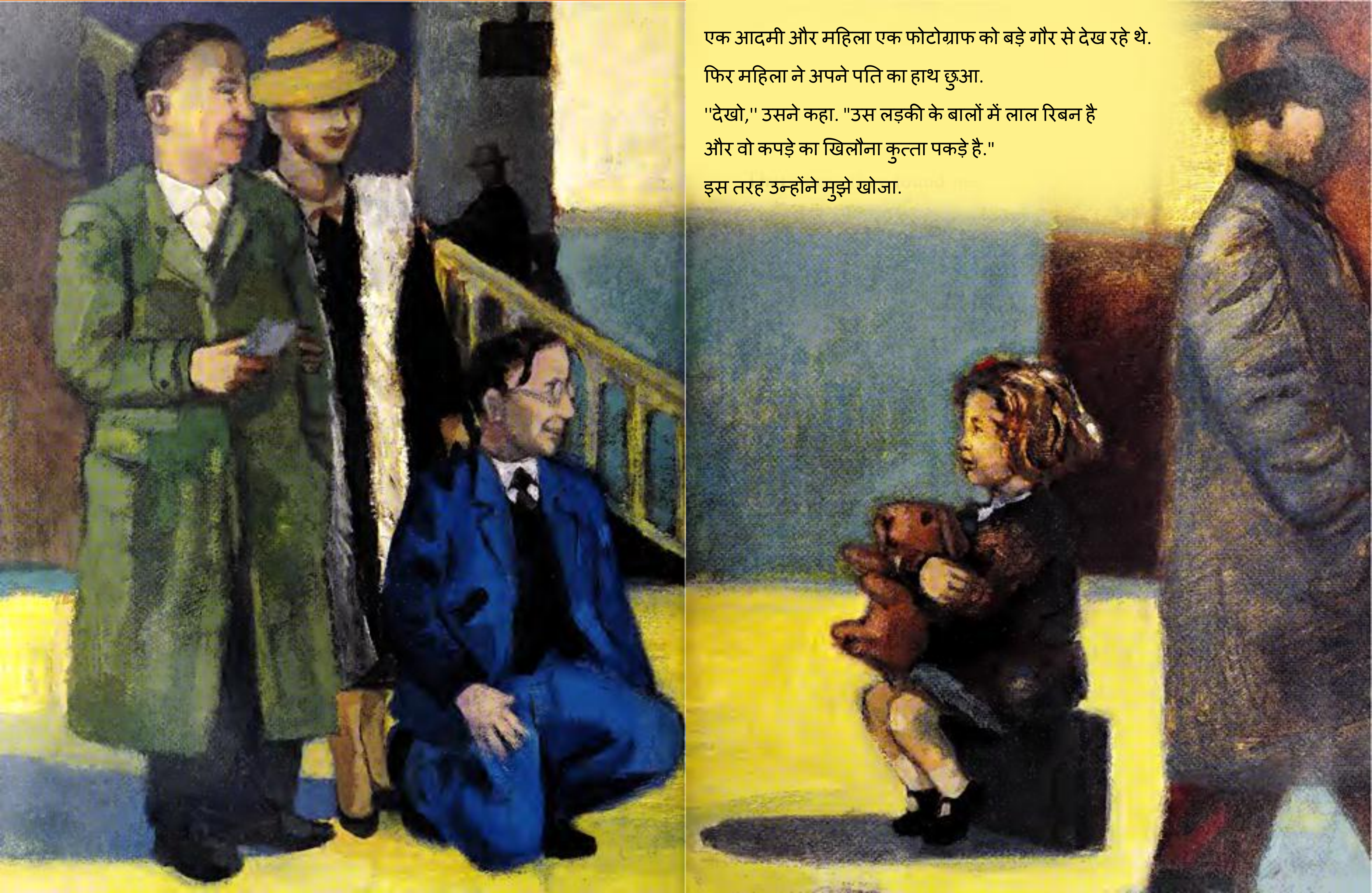

उनके साथ एक और आदमी था जो जर्मन बोल रहा था.

उसने कहा, "स्वागत है."

वो दंपति अंग्रेजी में बोल रहे थे.

मैं बस इतना कह सकी, "मेरी जेब में एक रूमाल है."

इस तरह मैंने खुद पढ़ना सीखना शुरू किया.

जब भी मैं कोई नया शब्द सीखती तो उसको किसी वाक्य में पिरोती.

"मेरी जेब में एक कुत्ता है."

"मेरी जेब में एक घर है."

"मेरी जेब में एक शिक्षक है."

वो आदमी और महिला स्कॉटलैंड से आए थे. वहां सब कुछ बहुत अलग था.

जर्मनी में मैं अपने पिता की साइकिल की एक छोटी सी सीट पर बैठती थी.

एडिनबर्ग में, जहां वे रहते थे, उनके पास एक कार थी.

और मेरे पास अब एक असली कुत्ता था

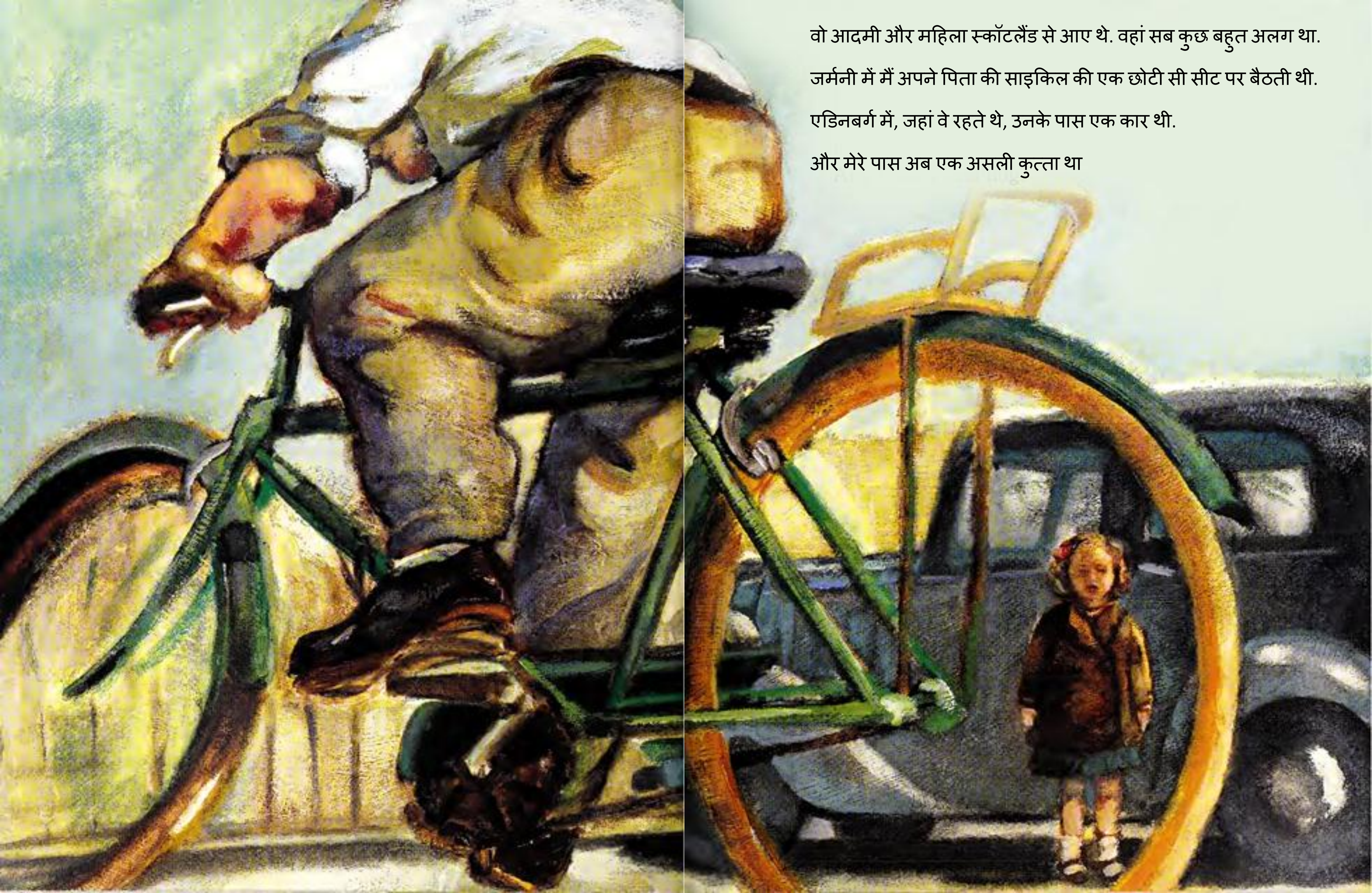

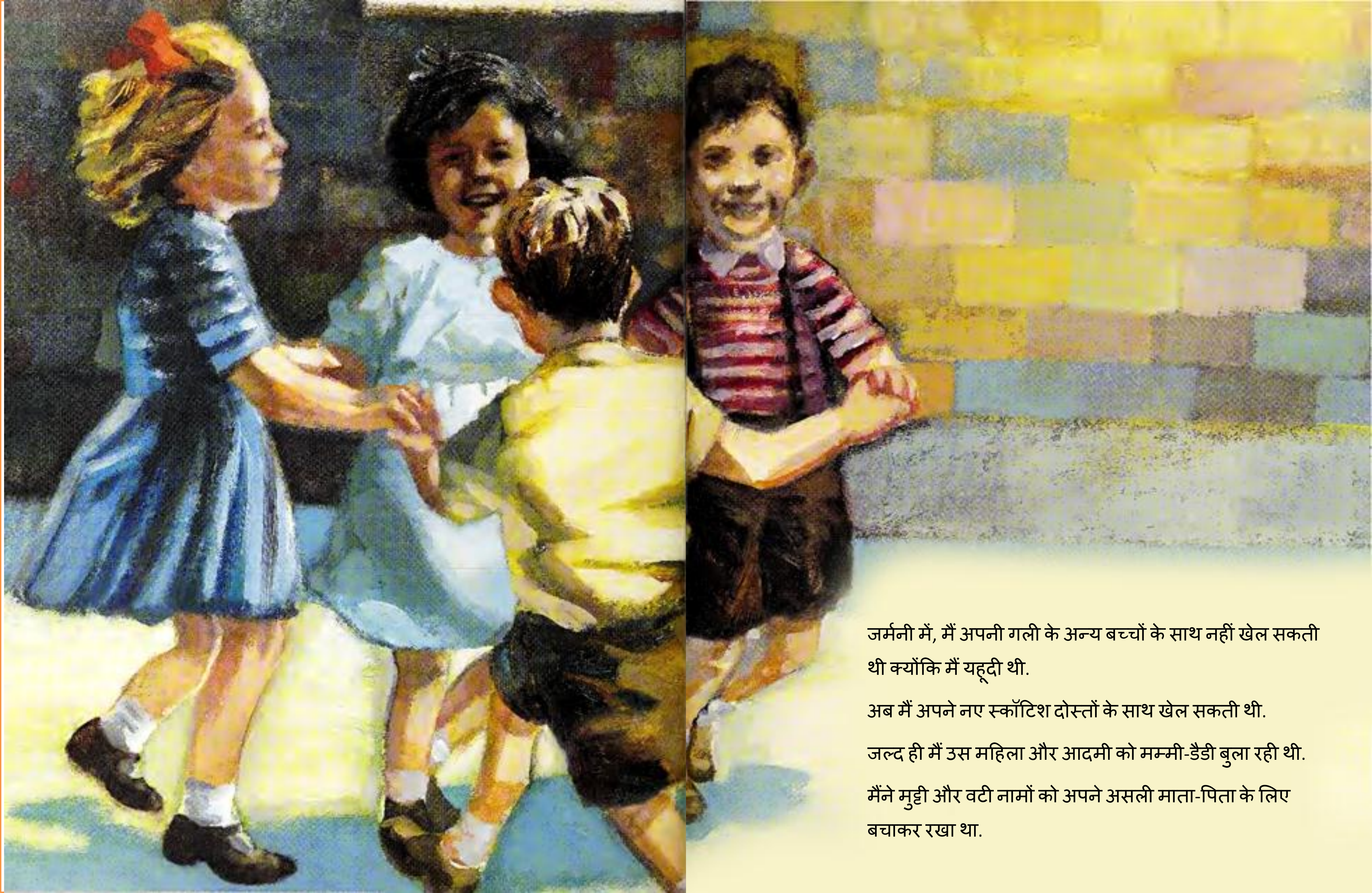

जर्मनी में, मैं अपनी गली के अन्य बच्चों के साथ नहीं खेल सकती थी क्योंकि मैं यहूदी थी.

अब मैं अपने नए स्कॉटिश दोस्तों के साथ खेल सकती थी.

जल्द ही मैं उस महिला और आदमी को मम्मी-डैडी बुला रही थी.

मैंने मुट्टी और वटी नामों को अपने असली माता-पिता के लिए बचाकर रखा था.

मुझे मुट्टी और वटी का एक पत्र मिला.

"हम तुम्हें बहुत याद करते है.

याद रखना, अच्छी तरह से बर्ताव करना.

और हमें पत्र लिखना मत भूलना.

आज सुबह हमने कुकुरमुत्ते तोड़े और फिर हमें तुम्हारी याद आई.

हमें उम्मीद है कि हम बहुत जल्द ही तुम्हारे साथ होंगे."

मुझे भी यही उम्मीद थी.

मैंने मुट्टी और वटी के पत्र को संभाल कर रखा.

मैं उसे हर दिन पढ़ती हूं.

मैंने उनके पत्र को अपनी जेब में सुरक्षित रखा

और युद्ध के ख़त्म होने का इंतज़ार किया.

समाप्त